फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 101 नवम्बर 1996

अपने बारे में, इस अखबार के बारे में बात करने आप किसी भी दिन मजदूर लाइब्रेरी आ सकते / सकती हैं।

तालियाँ, तालों की

10 अक्टूबर के पंजाब केसरी में **अमेटीप मशीन टूल्स** मैनेजमेन्ट का बयान था कि 8 अक्टूबर को की लॉक आउट फैक्ट्री में मजदूर जबरन आ–जा रहे हैं। 12 सितम्बर को **ईस्ट इंडिया कॉटन मिल** मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी की और बिना किसी परेशानी के फैक्ट्री में मौजूद सुबह व जनरल शिफ्ट के वरकरों को बाहर निकाला तथा दोपहर की शिफ्ट के मजदूरों को प्रवेश नहीं करने दिया। **निप्पुन क्रेन्स** में तालाबन्दी.......

तालाबन्दियों की जानकारी एस पी - डी सी - डी एल सी - मन्त्रियों को होती है। मैनेजमेन्टें और लीडर लोग तो इन्हें सूचनायें देते ही हैं, खुफिया पुलिस भी इन्हें रिपोर्टें देती हैं।

अभी आमतौर पर लॉक आउट फैक्ट्री के वरकर अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों को जानकारी देने की जरूरत महसूस नहीं करते। तालाबन्द फैक्ट्री के अगल-बगल की फैक्ट्रियों के वरकरों को भी घटनाओं-मसलों की जानकारी नहीं होती और अन्य मजदूरों को तो तालाबन्दी तक का पता नहीं होता। लॉक आउट फैक्ट्री के बौखलाये वरकर इस बारे में टोकने पर उबल पड़ते हैं: "इस-इस अफसर, उस-उस मन्त्री को बता दिया पर कुछ नहीं हुआ तब अन्य मजदूरों को बताने से क्या होगा?"

क्यों बतायें ? किसको बतायें ? कैसे बतायें ?

मैनेजमेन्टें और सरकारें अपनी बातें बताने पर लाखों- करोड़ों- अरबों रुपये खर्च करती हैं। क्यों ? सोचिये।

मैनेजमेन्टों और सरकारों के पास काफी पैसे होते हैं इसलिये गोपनीय तरीकों के संग-संग अखबारों - पत्रिकाओं- रेडियो- टीवी- लीडरों- बिल बोर्डों- प्रवचनों के जरिये अपनी बातें कहती हैं।

दरअसल मजदूरों के लिये "क्यों बतायें ? किसको बतायें ? कैसे बतायें?" के **प्रश्न इस तथ्य से जुड़े हैं कि समाज में अब मोटे तौर पर दो पक्ष हैं : मजदूर-पक्ष और मैनेजमेन्ट-पक्ष। मजदूरों और मैनेजमेन्टों के हित एक-दूसरे के खिलाफ हैं इसलिये लगातार खट-पट व टकराव होते हैं। मैनेजमेन्टों द्वारा मोर्चाबन्दी करना आम बात है। पुलिस-फौज-प्रचार-शिक्षा-दीक्षा का तन्त्र मैनेजमेन्ट-पक्ष की किलेबन्दी है। मजदूरों द्वारा विरोध करना आम बात है। संख्याबल और सामुहिकता मजदूर-पक्ष को सागर की व्यापकता तथा गहराई देती हैं।**

तालाबन्दी अथवा अन्य हमलों के शिकार मजदूर अपनी बातें इसलिये बतायें ताकि अपने पक्ष को मजबूत कर सकें। अपनी बातें अन्य मजदूरों को बतायें ताकि उन्हें साँझेदार बना कर अधिकाधिक व्यापक हो सकें। हमले के शिकार मजदूरों के साथ अन्य मजदूरों के जुड़ने से पुलिस-प्रशासन भी दादागिरि करने से झिझकता है और मैनेजमेन्ट को पीछे हटना पड़ता है। यह इसलिये क्योंकि एक-दूसरे के विरोधी पक्षों के बीच मसले ताकत से हल होते हैं। अन्य मजदूरों के समर्थन करने से तालाबन्द फैक्ट्री के मजदूरों की ताकत बढ़ती है।

अफसर - मन्त्री और सम्पूर्ण सरकारी तन्त्र मैनेजमेन्ट-पक्ष के प्रमुख स्तम्भ हैं। इसलिये इनके पक्षपाती व्यवहार पर छाती पीटने की कोई तुक नहीं है। मैनेजमेन्ट - लीडर - खुफिया पुलिस की रिपोर्टों से यह लोग घटना के बारे में जानते हैं इसलिये इन्हें सूचना देने के लिये ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं होती। साहबों के पास एक पत्र भेजना ही काफी होता है परन्तु लीडर लोग इस-उस मन्त्री - अफसर के पास भाग-दौड़ को ही आन्दोलन - संघर्ष - कुर्बानी - मेहनत का शिखर प्रस्तुत करते हैं। लीडरी के, सब लीडरों के, प्रत्येक लीडर के मैनेजमेन्ट- पक्ष में होने का यह पर्याप्त सबूत है — नये- नये लीडर बने लोग ढर्रे पर चलने के कारण ऐसा अनजाने में ही क्यों न करते हों।

"क्यों बतायें ?" और "किसको बतायें ?" के बारे में हमें काफी विचार-विमर्श की जरूरत है क्योंकि इस समय सरकार को बताना, अफसरों-मन्त्रियों को बताना छाया हुआ है। इस बताने से खास कुछ नहीं होता यह हम बार-बार देख रहे हैं, भुगत रहे हैं। इसलिये साहबों - मन्त्रियों को बताने के लिये की जाती भाग-दौड़ हमारी कमजोरी है परन्तु इसे ताकत के तौर पर पेश किया जाता है। **तालाबन्दी के शिकार मजदूर थोड़े दिन में ही शिकायत करने लगते हैं कि पुलिस-प्रशासन-मन्त्री सब बिके हुये हैं, मजदूरों के लिये यह लोग कुछ भी नहीं करते।**

अपने जैसे अन्य मजदूरों को बताना कमजोर कदम माना जाता है जबकि वास्तव में ऐसा करना हमारी असल ताकत है। परन्तु "हमारे जैसे ही भूखे - नंगे - कमजोर हमारी क्या मदद करेंगे ?" का सवाल हमारे बीच खूब उछल रहा है और इस पर गहराई से सोचने की जरूरत है।

इनसे जुड़े सवाल हैं : **लीडर लोग ही सक्रिय क्यों होते हैं ? ज्यादातर मजदूर निष्क्रिय क्यों रहते हैं ?** इन सवालों का जो टका-सा जवाब मिलता है वह यह है कि लीडरों को ही जानकारी होती है इसलिये ऐसा है। परन्तु यह टका खोटा है। वास्तव में मैनेजमेन्टों से टकरावों में वेतन - वर्क लोड - वर्किंग कन्डीशन - दमन के मुद्दे प्रमुख होते हैं और इनके बारे में प्रत्येक मजदूर को अपने हित की बातों की जानकारी होती है। यह बातें अन्य मजदूरों को बताने के लिये भाषणबाजी की कलाबाजी जानने की जरूरत नहीं होती। सब मजदूर यह जानकारी अपने पड़ोसी मजदूरों को दे सकते हैं, अन्य वरकरों को बता सकते हैं। सब मजदूरों की सक्रियता मजदूर-पक्ष की असल ताकत है।

"बन्द कमरों में जो भी समझौता वार्तायें होती हैं वे मजदूरों के खिलाफ होती हैं।" — आयशर ट्रैक्टर फैक्ट्री का एक वरकर।

बन्द कमरों में साहबों से बात-चीत लीडर लोग करते हैं। मजदूरों के प्रतिनिधि बन कर लीडर यह करते हैं। वे ऐसा कर सकें इसके लिये मजदूरों में सामुहिकता की बजाय एकता जरूरी होती है। लीडर और एकता एक-दूसरे के पूरक हैं। और, अब इसमें कोई शक नहीं है कि एकता के रिजल्ट हर जगह मजदूरों के लिये जहरीले फल होते हैं।

"क्यों बतायें ?" और "किसको बतायें ?" के सवालों को थोड़ा छूने के बाद आइये "कैसे बतायें ?" के प्रश्न पर विचार करें।

(बाकी पेज तीन पर)

यस सर ! सॉरी सर !

काम चोरी की सुनो कहानी, वो तो कुछ न करता था ;
फिर भी ऑफिस का बॉस उसे, काम चोर कहा करता था।

बचपन में स्कूल नाम की, जेल में वो जाया करता था ;
किताबों की बेड़ी पीठ पे, और डिसिप्लिन का हथकड़ी होता था।
पढाई क्यों चल रही है, समझ न उसे आता था ;
छुट्टी का ही इन्तजार, हर वक्त वो किया करता था।
रोज स्कूल जाता था मगर, होमवर्क कभी न करता था ;
फिर भी सुनो कैसे वो, सजा से बच जाता था।
होमवर्क जमा करते वक्त, कापी कोई भी देता था ;
टीचर्स रूम तक ले जाते वक्त, शर्ट में वो कापी छुपाता था।
खेलकूद की क्लास चुरा के जो, पढाई का क्लास चलता था;
चोरी का इल्जाम टीचर पे लगा कर, वो क्लास कभी न करता था।
परीक्षा के लिये पढने का वो, बुरी आदत नहीं डाला था ;
नकल करने की विद्या में वो, माहिर जो हुआ करता था।
ऐसा नहीं कि कभी भी वो, पकड़ा नहीं जाता था ;
सिर झुका के, मुँह लटका के, "सरजी सॉरी" कहता था।

काम चोरी की सुनो कहानी, वो तो कुछ न करता था ;
फिर भी ऑफिस में सब उसे, काम चोर कहा करता था।

टाइम से पहुँचने का बुरी आदत, कभी न उसने डाला था ;
ऑफिस नाम के पिंजरे से वो, जल्दी भागा करता था।
लंच में वो रोज जरूर, मच्छी ले के जाता था ;
काँटे चुनने में ही सारी, लंच पार हो जाता था।
खाने के बाद सोने को वो, आदत से मजबूर था ;
इस मशीन से नहीं हो सकता, वो ऐलान करता था।
छुट्टी के बाद कभी किसी को, बता के न निकलता था ;
फिर से काम दे न दे कोई, इसी से वो डरता था।
बीमारी की कहानी फेंक के, फिल्म को वो जाता था ;
एक दिन पकड़े जाने पर उसे, पेजर पकड़ाया गया था।
पेजर बड़ी खराब चीज है, ऑफ कभी न होता था ;
फिर भी उसने दिमाग लगा के, तरकीब कमाल का निकाला था।
जेब में हर वक्त वो तो, दो खराब सेल रखता था ;
अगले दिन बॉस डाँटे तो, सेल खत्म कह देता था।

काम चोरी की सुनो कहानी, कितना कुछ वो करता था ;
फिर भी ऑफिस का बॉस उसे, काम चोर कहा करता था।

सिर झुका के, मुँह लटका के वो तो, फिर भी "सॉरी" कहता था।

— मृत्युंजय, दिल्ली

लखानी इन्डिया लिमिटेड
मजदूरों के दो खत

I. लखानी के मजदूरों का बहुत शोषण हो रहा है। अक्टूबर के पहले हफ्ते में कम्पनी ने बिना आरोप लगाये 82 मजदूरों को निकाल दिया। यही नहीं, निकाले गये मजदूरों को पिछले किये काम का वेतन भी नहीं दिया। इस बात पर सारे मजदूर निराश हो कर डी.सी. के पास गये परन्तु उसने भी हमारी कोई सुनवाई नहीं की। लखानी के मालिक ने कानून को ही खरीद लिया है इसलिये गरीब मजदूरों की सुनवाई कानून भी नहीं कर रहा। और सारे मजदूरों को भी कम्पनी से निकालने की कोशिश कर रहे हैं। पुलिस की चार-चार गाड़ी गेट पर लगा कर रेगुलर मजदूरों को निकाल रहे हैं। कम्पनी में परमानेन्ट वरकरों पर दबाव डाल कर ठेकेदारी प्रथा बहुत ज्यादा चला रहे हैं। — 15.10.96

II. प्लॉट नम्बर 131, सैक्टर-24 में बिना लैटर, बिना आरोप-पत्र जबरदस्ती बाहर निकाल रहे हैं। 16.10.96 के दिन मैनेजमेन्ट ने वरकरा को गेट पर सादे कागज पे साइन करने को कहा। बोले कि साइन करते हो तो अन्दर आओ नहीं तो बाहर जाओ। किसी ने भी साइन नहीं किया। " हमें सस्पैन्ड लैटर दो " कहा तो बोले कि कोई लैटर नहीं है, जाओ।

गरीब मजदूरों को बहुत परेशान किया जा रहा है। लेबर डिपार्टमेन्ट तथा यहाँ का प्रशासन चुपचाप देख रहे हैं।

16.10.96 — लखानी शूज के मजदूर

सपना-सोभाग टैक्सटाइल्स

24 सैक्टर स्थित सपना - सोभाग में मजदूरों द्वारा वर्क लोड बढाने का विरोध करने पर मैनेजमेन्ट ने कुछ वरकरों को सस्पैन्ड कर दिया। इस पर सब मजदूरों ने हड़ताल कर दी। अक्टूबर के आखिरी हफ्ते में मैनेजमेन्ट ने पुलिस की मदद से ठेकेदारों के कुछ वरकरों को फैक्ट्री में ले जाना आरम्भ कर दिया है। सपना - सोभाग के मजदूरों ने अपनी बातें विस्तार से हमें अभी नहीं बताई हैं। ■

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

ग़ज़ल

भूखे बच्चे खुश्क जमीं पर बिलख रहे हैं
आसमान में बूढ़े ताक़त परख रहे हैं।

आज उन्हीं को पागल कहते हैं सब लोग
जीवन भर जो बच्चों जैसे सरल रहे हैं।

यूँ बदलाव की सूरत सब को भली लगी
चेहरों को भी कपड़ों जैसे बदल रहे हैं।

राज़ सुनो कि प्यास नहीं क्यूँ बुझ पायी
पानी के अन्दर कुछ सहरा भटक रहे हैं।

इंसानी कपड़ों में दर-दर खड़े हैं ठूँठ
दिल के बदले टीन के डिब्बे धड़क रहे हैं।

उनके लिये अपनी आँखें बादल कर डाल
जिनकी आँखों में अँगारे धधक रहे हैं।

नन्हीं यादें टूट के ऐसे बरसी हैं
आसमान से गोया तारे टपक रहे हैं।

वाइज़ की बातें सुनकर हैं खुश सब लोग
खड़े-खड़े ही आसमान तक उछल रहे हैं।।

— संजय ग्रोवर, हाथरस

यूरेस्टन मैटल इन्डस्ट्रीज

125 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित यूरेस्टन मैटल इन्डस्ट्रीज में बरसों से कार्यरत 150 मजदूरों में से आधों के नाम रजिस्टर तक पर नहीं होने से पार पाने के लिये यह वरकर एक यूनियन से जुड़े। मैनेजमेन्ट ने तब सब मजदूरों का गेट रोक दिया। डी एल सी के हस्तक्षेप पर यूरेस्टन मैनेजमेन्ट ने सब मजदूरों के नाम लिखने व उन्हें ड्युटी पर लेने का आश्वासन दिया परन्तु 60 वरकरों को नहीं लिया। मजदूरों ने तब एक पार्टी के लीडर के चक्कर काटे और लीडर के कहने पर यूरेस्टन मैनेजमेन्ट ने उन 60 को भी ड्युटी पर ले लिया परन्तु उनके नाम रजिस्टर पर नहीं लिखे। लेबर डिपार्टमेन्ट में मजदूरों द्वारा इस सब की बार-बार शिकायत करने पर मैनेजमेन्ट ने 4-5 साल से सर्विस कर रहे वरकरों के भर्ती फार्म भरे। साथ ही साथ मैनेजमेन्ट ने मजदूरों से सादे कागज पर दस्तखत करवाये। नई सर्विस दिखाने पर, नई तारीख से अपाइन्टमेन्ट दिखाने पर 45 मजदूरों ने एतराज किया। इस पर मैनेजमेन्ट ने उन 45 को निकाल दिया। लेबर डिपार्टमेन्ट में इसकी शिकायत करने पर तारीखों का सिलसिला चला। तारीखों के दौरान लेबर इन्सपैक्टर के सम्मुख यूरेस्टन मैनेजमेन्ट ने कहा कि उन 45 मजदूरों ने उनके यहाँ कभी काम ही नहीं किया। साहब द्वारा रिकार्ड मँगाने पर मैनेजमेन्ट ने रिकार्ड पेश नहीं किया। तब लेबर इन्सपैक्टर ने मैनेजमेन्ट के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की बजाय मजदूरों से केस डालने को कह कर अपने हाथ झाड़ लिये। ■

....तालियाँ, तालों की (पेज एक का शेष)

"कैसे बतायें ?" पर विचार करते समय हमें दो खास बातें ध्यान में रखने की जरूरत है। तालाबन्दी के शिकार मजदूरों और मजदूर-पक्ष का संख्याबल तथा सामुहिकता हमारी एक विशेषता है तो अपने विरोधी की तुलना में धनबल की कमी दूसरी खासियत है। हमें बताने के उन तरीकों को अपनाने - ढूँढने - रचना करने की जरूरत है जिनसे हमारी बातें अधिक से अधिक मजदूरों तक पहुँचें तथा उन्हें साँझेदार बनायें और पैसे कम से कम खर्च हों।

तालाबन्दी के शिकार मजदूरों के पास टाइम बहुत होता है इसलिये हाथ से लिख कर पोस्टरों को जगह-जगह चिपकाना बहुत आसान व सस्ता है। एक जैसी बातें लिखने की बजाय रंग-बिरंगी भाषा खुल कर इस्तेमाल करना, गीतों व कार्टूनों में पूरी आजादी बरतना हमारे पोस्टरों को रोचक बनाने के संग-संग धार भी देते हैं।

पर्चे छाप कर बाँटना अब अपनी बात दूर-दूर तक फैलाने का एक सरल जरिया है।

> **आसान-सस्ता-शीघ्र पर्चा**
>
> पर्चा निकालना बहुत आसान है। अपनी बात अपने ढँग से लिखें। कोई गड़बड़ नहीं होगी। बातें कम-बेशी लिखने या आगे-पीछे लिखने से कोई फर्क नहीं पड़ता। आजादी से लिखें, खुल कर लिखें। कोई नुकसान नहीं होता। भाषा - शब्दों की चिन्ता न करें, सब चलता है।
>
> पर्चा छापना महँगा नहीं होता। ठीक-ठाक साइज के एक हजार पर्चे डेढ सौ रुपये में और तीन हजार पर्चे चार सौ रुपये में छप जाते हैं। अपनी बातें फैलाने का पर्चा एक सस्ता साधन है।
>
> पर्चा एक दिन में ही छप जाता है। सुबह की घटना की जानकारी उसी दिन शाम को पर्चे द्वारा फैला सकते हैं। यह काम कम्प्यूटर पर करवायें चाहे पुरानी किस्म की प्रेस पर — हर शहर में दोनों ही बड़ी संख्या में हैं।

पर्चे छापना तो फिर भी कुछ पैसे माँगता है, जलूस निकालने में तो हमारी एक कौड़ी भी खर्च नहीं होती। अपनी बातें इलाके में फैलाने के लिये तालाबन्दी के शिकार मजदूरों द्वारा हर रोज जलूस निकालना पर्चे-पोस्टरों से कई गुणा अधिक प्रभाव का है।

जलूस मजदूर-पक्ष के संख्याबल तथा सामुहिकता को ठोस आकार देने का एक असरदार तरीका है। अन्य मजदूरों को जोड़ने के लिये जलूसों का समय महत्वपूर्ण है। इसलिये तालाबन्दी व अन्य हमलों के शिकार मजदूरों द्वारा शिफ्टें शुरू होने के वक्त तथा शिफ्टें छूटने के समय जलूस निकालना बनता है। ऐसा करने पर सौ मजदूरों का जलूस हजारों वरकरों का जलूस बन जाता है। लॉक आउट फैक्ट्री अमेटीप मशीन टूल्स के 450 मजदूरों द्वारा 11 अक्टूबर को शाम की शिफ्ट छूटने के समय मथुरा रोड़ पर निकाला गया जलूस अन्य फैक्ट्रियों के वरकरों की शिरकत से ओल्ड फरीदाबाद चौक तक दस हजार मजदूरों का जलूस बन गया था। वरकरों के संख्याबल के ऐसे ठोस उदाहरण सरकारों व मैनेजमेन्टों को कंपकंपा देते हैं तभी तो 12 अक्टूबर को एस डी एम, डी एल सी तथा अमेटीप मैनेजमेन्ट भारी पुलिस बल के साथ समझौता वार्ता करने फैक्ट्री में गये जहाँ 8 अक्टूबर की लॉक आउट के बाद मजदूर जबरन दाखिल हो रखे थे। 12 सितम्बर से तालाबन्द ईस्ट इंडिया कॉटन मिल के तीन हजार मजदूरों के पास बात-चीत करने कोई साहब नहीं गया क्योंकि यह मजदूर चुप्पी साधे बैठे हैं......

मकसद अन्य मजदूरों तक अपनी बात पहुँचाना और उन्हें अपने साथ जोड़ने का होता है इसलिये तालाबन्दी व अन्य हमलों के शिकार मजदूरों द्वारा हर रोज जलूस निकालना बनता है। शिफ्टें शुरू होने और खत्म होने के वक्त डेली जलूस निकालना बनता है। अलग-अलग दिशाओं और क्षेत्रों में जलूस निकालना बनता है। हमारे हर रोज के यह जलूस आधा-पौन घन्टे के बनते हैं और यह पुलिस - प्रशासन के लिये भारी सिरदर्द होते हैं। इसलिये पुलिस जबरन हमारे जलूसों को रोकेगी ही। पुलिस द्वारा रोकने पर टकराव करने में कोई तुक नहीं है। एक जगह रोक देने पर दूसरी जगह जलूस निकालना बनता है। रोकने पर रुक गये पर फिर दूसरी जगह से शुरू हो गये! **फँसने पर आर-पार टाइप टकराव पुलिस-प्रशासन-मैनेजमेन्टें चाहती हैं ताकि लाठी-गोली से हमें कुचल सकें। आर-पार टाइप टकराव मजदूरों के हित में नहीं हैं। हम तो रोज अपने कदम आगे-पीछे, आड़े-तिरछे कर सकते हैं और सरकारी तन्त्र को पसीने-पसीने कर सकते हैं। फैक्ट्रियों में आर-पार की लड़ाई की बजाय मैनेजमेन्टों के गलों में वह हड्डी बनना जिसे न तो वे उगल सकें और न निगल सकें हमारी असली ताकत है। वैसे ही, सरकारी तन्त्र से संघर्ष के दौरान आर-पार टाइप टकराव की बजाय लगातार साहबों की नींद हराम करने में हमारी असल ताकत है। टकरावों के दौरान मैनेजमेन्टों और पुलिस-प्रशासन का तनाव में होना स्वाभाविक है क्योंकि यह उनके लिये आफत होते हैं। ड्युटी की रुटीन हमारे लिये झिक-झिक और तनाव लिये है। इसलिये संघर्ष के दौर हमारे उत्सव बन सकते हैं। टकरावों के दौरान मजदूर मस्त रह सकते हैं। तनाव की बजाय मस्ती हमारी ताकत है।**

जो जानते हैं उन्हें बताने के लिये उनके पास जलूस ले जाने की कोई तुक नहीं होती। लीडर लोग जो इक्का-दुक्का जलूस डी एल सी - डी सी - कम्पनी हैड आफिस ले जाते हैं वह अपने भाव बढाने के लिये होता है। हमारे लिये अधिक नुकसानदायक है भागदौड़ करते लीडरों को मन्त्री-अफसरों द्वारा टरकाना और लीडरों द्वारा महीने-दो महीने में किये जाते रस्मी जलसे-जलूस। यह दोनों हथकन्डे मजदूरों को बिखेरने के सिलसिले के अंग हैं।

मजदूर-पक्ष के जलूस लीडरों की अगुआई में नहीं निकल सकते। अपने अन्य स्वार्थों के संग-संग लीडरों पर पुलिस की धमकियों का भी असर पड़ता है। इसीलिये वे बराये नाम के लिये डी सी - डी एल सी के पास रस्मी जलूस ले जाने के अलावा जलूस नहीं निकाल सकते। मजदूर-पक्ष के जलूस एकता की बजाय सामुहिकता की माँग करते हैं।

> **सामुहिकता**
>
> मजदूर जब मिलजुल कर जलूस निकालते हैं और कोई अगुआ नहीं होता/होती तब
>
> पुलिस किस को धमकाये ?
> किस पर हाथ डाले ?
> किस पर केस बनाये ?
> किसे पुचकारे ?

यह बात—चीत खत्म करने से पहले आइये कुछ चर्चा मैनेजमेन्टों और सरकारों को बताने के तरीके पर करें।

मजदूरों पर जकड़ बनाये रखने और नित नई शर्तें थोपने के लिये मैनेजमेन्टें अनेक कदम उठाती हैं। अन्य कदमों के फेल होने पर रामबाण के तौर पर मैनेजमेन्टें तालाबन्दी करती हैं। इसलिये **लॉक आउट फैक्ट्री में मजदूरों द्वारा जबरन प्रवेश करना मैनेजमेन्टों और सरकारों को कंपकंपा देता है।** 8 अक्टूबर को की तालाबन्दी के खिलाफ अमेटीप मशीन टूल्स मजदूर जब फैक्ट्री में घुस गये तब अमेटीप मैनेजमेन्ट, मैनेजमेन्टों की एसोसिएशन और सरकार में हड़कम्प मच गया। सरकार ने फैक्ट्री में पुलिस बैठा दी। पुलिस - प्रशासन व मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को फुसलाने के प्रयास किये। बात नहीं बनने पर सरकार ने 16 अक्टूबर को भारी पुलिस बल से फैक्ट्री को घेरा और गोली चलाने की धमकी के साथ-साथ कानूनी भ्रमजाल व आश्वासनों की चाशनी में फँसा कर मजदूरों को फैक्ट्री से निकाला। अमेटीप मजदूरों की तरह अन्य फैक्ट्रियों

(बाकी पेज चार पर)

नमस्ते बन्द !

साहब लोग जब-तब अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते रहते हैं। **बाटा फैक्ट्री** में पे रोल डिपार्टमेन्ट के क्लर्कों पर मैनेजर दादागिरि करने लगे। साहबों ने "कम्पनी संकट में है" की रट लगाते हुये यह किया। इस पर सितम्बर के आखिरी दिनों में पे रोल क्लर्कों ने साहबों से दुआ–सलाम बन्द करने का फैसला किया। इन वरकरों के इस छोटे से सामुहिक कदम को एक महीना ही हुआ था कि मैनेजरों के पसीने छूट गये। साहबों ने 28 अक्टूबर को पे रोल क्लर्कों से माफी माँगी।

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल

डेढ साल से यह बिलकुल साफ है कि मैनेजमेन्ट बड़े पैमाने पर छँटनी करना चाहती है। इस बीच यह भी पूरी तरह स्पष्ट रहा है कि ईस्ट इंडिया मजदूरों पर मैनेजमेन्ट का कन्ट्रोल नहीं रहा है। वरकरों पर अपनी जकड़ फिर स्थापित करने के लिये मैनेजमेन्ट ने कई हथकन्डे अपनाये परन्तु कामयाब नहीं हुई। एक बार तो मजदूरों ने ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट द्वारा नया लीडर पैदा करके वरकरों को हाँकने के हथियार को भी फेल कर दिया।

बिना लीडरों के कोई भी मैनेजमेन्ट सफल नहीं हो सकती। इस महाज्ञान से रौशन ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट ने फूँक-फूँक कर कदम उठाये। कुछ सक्रिय मजदूरों को उभारने, उन्हें लीडर बना कर मजदूरों की नकेल उनके हाथों में थमाने में मैनेजमेन्ट कामयाब हुई। इसके लिये मैनेजमेन्ट ने "इससे बात नहीं करना", "इनके जरिये कुछ नहीं देना", "पुराने लीडरों को चाहती है" जैसे बाजीगरी नुस्खे अपनाये और ईस्ट इंडिया मजदूरों की नजर बाँधने में सफल हो गई।

लीडरी की पुनःस्थापना के साथ ही ईस्ट इंडिया मजदूरों के दुर्दिन फिर शुरू हो गये। "झुकेंगे नहीं", "बिकेंगे नहीं", "इस बार निपटना है", "आर-पार की लड़ाई है" की ढपली पर मदहोश हो कर ईस्ट इंडिया वरकर नाचने लगे.....

मैनेजमेन्ट की बड़े पैमाने पर छँटनी की स्कीम से मजदूरों का ध्यान हटाने के लिये लीडरों ने एग्रीमेन्ट का खटराग गाया। फरीदाबाद तथा चंडीगढ़ में ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट और लीडरों के बीच समझौता वार्ताओं के दौर चले। इस दौरान मैनेजमेन्ट ने अजन्ता टेबल प्रिन्टिंग डिपार्टमेन्ट में दस दिन की तालाबन्दी की और लीडरों ने बाकी डिपार्टमेन्टों को सामान्य ढँग से चलवाया। अगस्त में तीन बार मैनेजमेन्ट ने लिस्टें टाँग कर पाँच-छह साल सर्विस वाले 300 मजदूरों की छँटनी की और लीडरों ने एग्रीमेन्ट की आरती में मजदूरों को लीन रखा। 2 सितम्बर को मैनेजमेन्ट ने अजन्ता डिपार्टमेन्ट खत्म कर दी और लीडरों ने कहा कि कोई छँटनी नहीं होगी। 10 सितम्बर को लीडरों ने फूँ-फाँ शुरू की और मैनेजमेन्ट ने अगस्त की तनखा दिये बिना 12 सितम्बर को तालाबन्दी कर दी। लीडरों ने कानून और पुलिस का डर दिखा कर दोनों फैक्ट्रियों से मजदूरों को चुपचाप निकाला। भागमभाग में लगे लीडरों ने तालाबन्दी के बाद भागदौड इतनी तेज कर दी कि हर रोज जलूस तो कहाँ, उन्होंने सितम्बर ही नहीं बल्कि अक्टूबर में भी एक भी जलूस नहीं निकाला। तीन हजार मजदूरों को बिखेर दिया गया। तालाबन्दी द्वारा फैक्ट्री से बाहर करने के बाद बिखेर दिये गये मजदूरों के बारे में ऊपर से प्रचार किया जा रहा है कि "वरकर डटे हुये हैं"।

इस प्रकार ईस्ट इंडिया मजदूर दलदल में फँसा दिये गये हैं। दलदल से निकलने के लिये मजदूरों द्वारा हर रोज सुबह व शाम जलूस निकालने का सिलसिला शुरू करना बनता है। साथ ही इन मजदूरों द्वारा तालाबन्द फैक्ट्री में जबरन दाखिल होने के प्रयास करना भी बनता है। इस सन्दर्भ में यह ध्यान में रखने की जरूरत है कि पावरलूम में इस समय छँटनी का मसला नहीं है इसलिये मैनेजमेन्ट की कोशिश है कि 24 सैक्टर स्थित पावरलूम को चलाये। 600 मजदूरों की छँटनी का मसला इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित प्रिन्टिंग व प्रोसेसिंग प्लान्ट का है इसलिये मजदूरों द्वारा फैक्ट्री में जबरन प्रवेश करने का सिलसिला इन्डस्ट्रीयल एरिया वाले प्लान्ट से आरम्भ करना बनता है। पुलिस-प्रशासन की नींद हराम कर मजदूर सरकार व मैनेजमेन्ट को पीछे हटने को मजबूर कर सकते हैं।■

झालानी टूल्स

मजदूरों की हाउसिंग की 22 एकड़ जमीन ग्यारह लाख रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से बेची गई और कागजों में साढ़े पाँच लाख का रेट दिखाया गया। इस प्रकार झालानी टूल्स मजदूरों के सवा करोड़ रुपयों का गबन किया गया। और अब थर्ड प्लान्ट बेचने में 8-10 करोड़ रुपयों की हेरा-फेरी की तैयारी है।

बकाया वेतन आदि और सर्विस-ग्रेच्युटी के पैसे जोड़ने पर झालानी टूल्स मजदूर 25 करोड़ रुपयों के लेनदार हैं। बैंकों का कर्ज और अन्य लेनदारों के बिल इनके अलावा हैं। काफी समय से कम्पनी की सम्पत्ति से काफी ज्यादा की देनदारी कम्पनी पर हो गई है। ऐसे में झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने डूबती कम्पनी में आखिरी लूट मचा रखी है। जोड़-तोड़, तिकड़मबाजी से कम्पनी की सम्पत्ति बेच कर मोटी कट - कमीशन- रिश्वत के रूप में मैनेजमेन्ट चाँदी कूट रही है। स्टाफ हाउसिंग प्लाट, क्रिकेट ग्राउन्ड नाम वाला बड़ा प्लाट और मजदूरों की हाउसिंग की 22 एकड़ जमीन ठिकाने लगा कर झालानी मैनेजमेन्ट अब खस्ताहाल फस्ट या सैकेन्ड की बजाय बेहतर कन्डीशन व मौके की जगह वाले थर्ड प्लान्ट को बेच रही है। बन्द होने की कगार पर खड़ी कम्पनी का फरीदाबाद में मैनेजमेन्ट द्वारा यह आखिरी सौदा लगता है।

झालानी टूल्स का प्रत्येक मजदूर लगभग एक लाख रुपयों का लेनदार है। ऐसे में कम्पनी की सम्पत्ति बेचने की कोशिश का मजदूरों द्वारा विरोध स्वाभाविक है। इसीलिये झालानी मैनेजमेन्ट ने लीडरों से दो महीने नौटंकी करवाई है ताकि वह थर्ड प्लान्ट बेच सके। मैनेजमेन्ट की साजिश है कि हर मजदूर को पाँच हजार दे कर उसके 95 हजार को खुड्डेलाइन लगा दे। इसीलिये मैनेजमेन्ट बढिया समझौता कर रही है। मिठाई बाँटने की तैयारी है..........

ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट ने लीडरों के साथ समझौता करके 1983 में जूट मिल के मजदूरों को दो-दो सौ रुपये दिये और उन्हें खुशी-खुशी घर घूम आने को कहा – जूट मिल बन्द और 13 साल बाद भी उन 900 मजदूरों को अपना हिसाब नहीं मिला है।

एक लाख में से पाँच हजार भागते भूत की लँगोटी नहीं है। दो-तीन महीने बाद माथा पीटने की बजाय झालानी टूल्स मजदूरों के सोचने और कदम उठाने का समय अभी है। थर्ड प्लान्ट बेचने में टुकड़ा पा रहे लोगों से मजदूरों द्वारा उम्मीद करना बहुत ज्यादा भोलापन होगा।■

...तालियाँ, तालों की (पेज तीन का शेष)

के वरकर भी तालाबन्दी पर जबरन फैक्ट्री में दाखिल होने लगेंगे तो मैनेजमेन्टों के इस ब्रह्मास्त्र के फुस्स होने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।

तालाबन्दी की जड़

जब फैक्ट्रियों के मालिक हुआ करते थे तब अपनी डिमान्डें हासिल करने के लिये मजदूर प्रोडक्शन रोकते थे, हड़ताल करते थे। परन्तु अब मैनेजमेन्टों का दौर है। फैक्ट्री का आज कोई मालिक नहीं होता। कम्पनियों में लगे पैसों का 80 परसैन्ट बैंक आदि से कर्ज होता है और 20 परसैन्ट हजारों शेयर होल्डरों का होता है। कम्पनियों का संचालन मैनेजमेन्टें करती हैं। मैनेजमेन्ट में प्रमुख पोजीशनों के लिये भारी उठा-पटक कम्पनी के नाम पर होती प्रत्येक खरीद व बिक्री में ली जाती 15 परसैन्ट कट - कमीशन - रिश्वत के लिये ही होती है। इन हालात में प्रोडक्शन रोक कर दबाव डालना अब मजदूरों की बजाय मैनेजमेन्टें अधिक करने लगी हैं। अब मैनेजमेन्टें मजदूरों पर अपनी जकड़ बनाये रखने और नयी शर्तें थोपने के लिये तालाबन्दियाँ करती हैं। मजदूरों को कमजोर करने के लिये लॉक आउट मैनेजमेन्टों का धारदार हथियार है। ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।